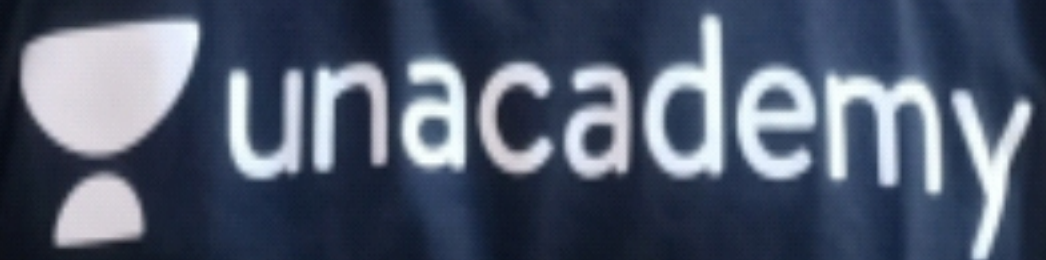


परीक्षा गुरु

-श्रीनिवास दास

प्रस्तुति - प्रभु दयाल हंस

unacademy

प्रकाशन वर्ष

श्री निवास दास जी द्वारा रचित यह उपन्यास 1882 ई.
में प्रकाशित हुआ।

पूर्व पीठिका

परीक्षा गुरु को हम हिंदी उपन्यास के विकास पथ पर मील का पत्थर भी कह सकते हैं। उन दिनों हिंदी उपन्यास तिलिस्मी, ऐयारी और अन्य तरह की चमत्कारिक घटना बहुल शैली में लिखा जाता था। जिसमें व्यक्ति और समाज के आंतरिक संघर्षों और समस्याओं पर नहीं, काल्पनिक, ऐन्द्रजालिक वातावरण की सृष्टि पर ज्यादा ध्यान दिया जाता था। एकाध लेखक ने इस वातावरण की दमघोट सीमाओं को तोड़कर बाहर निकलने का प्रयत्न किया पर वह अधिक से अधिक अर्ध रोमानी, सस्ते प्रेम कथानकों की रचना भर कर सके। यहां भी तिलिस्मी वातावरण से मुक्ति ना मिल सकी। इस तरह की परिस्थिति में लाला श्रीनिवास दास का परीक्षा गुरु प्रकाशित हुआ।

जिसमें जीवन की समस्याओं से मुख मोड़ कर तिलिस्मी गुहा, कोटरों में शरण लेने की प्रवृत्ति का एकदम अभाव था। उन्होंने अंग्रेजियत और उसके बढ़ते हुए विषैले प्रभाव में घुटती हुई भारतीयता की सुरक्षा की समस्या को सामने रखा। इस प्रकार की समस्यानुकूल कथावस्तु के चयन और उसके उपस्थापन के अद्भुत साहस के लिए श्रीनिवास दास की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। उन्होंने तत्कालीन उपन्यासों की दशा और दिशा को तय करने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उनका यह योगदान हिंदी साहित्य में स्मरणीय रहेगा।

उपन्यास की कथावस्तु

परीक्षा गुरु दिल्ली के बिगड़े रईस मदन मोहन के पतन और उद्धार की कथा है। मदन मोहन हासशील रईसी का प्रतिनिधि है जो अर्थ लोलुप और स्वार्थी चाटुकार दोस्तों की चापलूसी के चक्कर में पड़कर मिथ्या प्रतिष्ठा और बड़प्पन के प्रदर्शन में अपना सब कुछ गंवा बैठता है। एक और वह अंग्रेजियत और नई हवा से प्रभावित होकर विलायती प्रसाधन सामग्रियों को दूने चौगुने मूल्यों पर खरीदने में अपनी शान समझता है, दूसरी ओर अपने सभासद चुन्नीलाल, मास्टर शंभू दयाल, पंडित पुरुषोत्तम दास, हकीम अहमद हुसैन तथा बाबू बैजनाथ जैसे परावलंबी चाटूकारों से गदगद होकर राग रंग, फिजूलखर्ची और आवारागर्दी को झूठी इज्जत मान कर दीवालिया बन जाता है।

पंसारी का लड़का हरगोविंद बारह बारह रूपए की लखनवी टोपियों को 18 के भाव खरीदकर मदन मोहन से शाबाशी पाता है तो हकीम अहमद हुसैन एक कल्पित अत्तार की विपत्ति की झूठी कहानियां सुनाकर रईसी वस्तुओं के पारखी और संरक्षक मदन मोहन से एक शीशी इत्र के लिए ₹25 ऐंठ लेता है। मिस्टर ब्राइट, मिस्टर रसेल और घोड़ों के व्यापारी आगा जान से मिलकर चुन्नीलाल और शंभू दयाल दलाली और कमीशन में हजारों रुपयों का वारा न्यारा करते हैं और मदन मोहन को तारीफ और झूठी प्रशंसा के जाल में फंसा कर दीवालिया बना देते हैं। मदन मोहन की दुरवस्था सभी चाटुकार मित्र एक एक करके खिसक जाते हैं।

उस समय उसके मित्र ब्रजकिशोर ने , जो से आरंभ से ही उसे सही रास्ता दिखाकर सुधारने का प्रयत्न करते रहे, बड़े धैर्य के साथ इस विपत्ति में उसकी सहायता की और उसे आर्थिक संकट और सामाजिक अपमान से छुटकारा दिलाया। मदन मोहन की पत्नी भी दुख के दिनों में सारा तिरस्कार भूल कर पति के साथ खड़ी रही और हर प्रकार से उसकी सहायता की।

मदन मोहन के सिर से थोथी प्रतिष्ठा और चाटुकार प्रियता का भूत उतर जाता है और जब वह सही बात पर आ जाता है तो ब्रजकिशोर सोचते हैं- 'जो बात सौ बार समझाने से समझ में नहीं आती, वह एक बार की परीक्षा से भलीभांति मन में बैठ जाती है और इसी वास्ते लोग परीक्षा को गुरु मानते हैं।'

परीक्षा गुरु उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसने हिंदी उपन्यास की जीवन हीन एक रस चमत्कार बहुल कथा परंपरा को तोड़कर यथार्थवादी वस्तुओं को ग्रहण किया। परीक्षा गुरु का लेखक सामाजिक सुधार को साहित्य का प्रमुख प्रयोजन मानता है। इसी उद्देश्यपूर्णता के कारण यह उपन्यास तत्कालीन अन्य उपन्यासों से बिल्कुल भिन्न हो गया है। कभी कभी उद्देश्यपूर्णता का आग्रह इतना प्रमुख हो जाता है कि लेखक उपन्यास की कथा के बीच बीच में नैतिक उपदेशों से भरे लंबे-लंबे अंशों का समावेश कर देता है। इस तरह के अंश कथा श्रितिकास में निश्चित रूप से बाधक हैं। इसे लेखक भी अच्छी तरह जानते थे।

इसी कारण उन्होंने 'निवेदन' में लिखा है- जहां कुछ विद्या का विषय आ गया है, वहां कुछ शब्द संस्कृत के लेने पड़े हैं परन्तु जिनको ऐसी बातों के समझने में कुछ झमेल मालूम हो, उनकी सुगमता के लिए ऐसे प्रकरणों पर ऐसा × चिह्न लगा दिया गया है। जिससे उन प्रकरणों को छोड़कर हरेक मनुष्य सिलसिलेवार वृत्तांत पढ़ सकता है।

शैली की दृष्टि से यह उपन्यास समसामयिकों से भिन्न और अपेक्षाकृत अधिक आधुनिक शैली का प्रतीत होता है।

जैसा कि लेखक ने खुद लिखा है - अब तक नागरी और उर्दू भाषा में अनेक तरह की अच्छी-अच्छी पुस्तकें तैयार हो गई हैं। परन्तु मेरे जान इस रीति से कोई नहीं लिखी गई। इसलिए अपनी भाषा में यह नई चाल की पुस्तक होगी।

आगे उन्होंने इस नई चाल की व्याख्या करते हुए लिखा - अपनी भाषा में अब तक जो वार्ता रूपी पुस्तकें लिखी गई हैं उन्हें अक्सर नायक नायिका वगैरह का हाल ठेठ से सिलसिलेवार लिखा गया है। जैसे कोई राजा, बादशाह, सेठ साहूकार का लड़का था.... उसके मन में बात से रूचि हुई और उसका यह परिणाम निकला.... ऐसा सिलसिला इसमें कुछ भी नहीं है।

इसमें शक नहीं कि परीक्षा गुरु का आरंभ बहुत ही सांकेतिक और नाटकीय ढंग से हुआ है। मदन मोहन अंग्रेजी सौदागर की दुकान में नई चाल की चीजें देखने जाता है और वहीं उसके चाटुकार मित्रों और निस्वार्थ शुभचिंतक ब्रजकिशोर के वाद विवाद से उपन्यास का आरंभ होता है।

आज यह शैली हमारे उपन्यासों में इतनी प्रयुक्त हो चुकी है कि इसमें कोई नवीनता नहीं प्रतीत होती और उस समय तो इस शैली में उपन्यास लिखने का प्रयत्न करना नई चाल अवश्य थी। इस नई चाल के बावजूद उपन्यास का कथानक अत्यंत अव्यवस्थित है। लेखक नैतिक उपदेश और विभिन्न प्रकार के सामयिक असामयिक उद्धरणों को देने का मोह संवरण नहीं कर पाता, जो प्रायः कथा की एकसूत्रता को खंडित कर देते हैं।